Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

एक और द्रोणाचार्य ' नाटक की प्रासंगिकता

प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे
सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष
श्री मधुकरराव बापुराव पाटिल खतगांवकर महाविद्यालय
शंकरनगर त.- बिलोली, जि- नांदेड

शोधसार - एक और द्रोणाचार्य इस नाटक में शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियां, भ्रष्टाचार, पक्षपात और राजनीतिक व सामाजिक दबाव के चलते शिक्षकों के सिद्धांतों से समझौता करने की परंपरा पर कटाक्ष किया है । नाटककार शंकर शेष ने पौराणिक कथा के माध्यम से यह दिखाया है कि, कैसे वर्तमान व्यवस्था के दबाव में शिक्षक नैतिक मूल्य शिक्षा के साथ समझौता करने को मजबूर होते हैं। जिससे भावी पीढ़ी का भविष्य उध्वस्त होता है। यह नाटक वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद और व्यावसायीकरण पर तीखा व्यंग्य करता है । इस नाटक में अरविंद जो एक आदर्श शिक्षक है, उसे सत्ता के सामने लाचार होकर समझौता करना पड़ता है साथ ही पदों से सिद्धांतों का त्याग करना पड़ता है। जिस कारण शिक्षक व्यवस्था के हाथों की कठपुतली बन जाते हैं। साथ ही एकलव्य के जैसे अन्याय सहन करने की परंपरा को निभाते है। जहां आर्थिक और राजनीतिक दबाव सहन न होने पर भी अध्यापक अपना संयम खो नही देते हैं। इस नाटक के माध्यम से लेखक का उद्देश्य पाठक और दर्शकों को यह बताना है कि, वे शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों को समझ सके और व्यवस्था के विरुद्ध अपनी आवाज उठा सके। पौराणिक द्रोणाचार्य की कहानी के माध्यम से नाटककार ने वर्तमान युग की सामाजिक व्यवस्था को उजागर किया है। साथ ही एक शिक्षक के द्वंद स्थिति का और त्रासदी को अभिव्यक्त किया है।

बीज शब्द - शिक्षा व्यवस्था ,विसंगतियां,शिक्षा प्रणाली , भ्रष्टाचार, शैक्षणिक व्यवसायीकरण, सामाजिक भेदभाव,गुरु शिष्य संबंध,शिक्षा व्यवस्था में भेदभाव ।

प्रस्तावना -

'एक और द्रोणाचार्य' इस नाटक की कथा महाभारत से ली गई है और यह रचना भारतीय साहित्य और संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस नाटक के कई प्रसंग वर्तमान परिवेश के साथ जिसमें सामाजिक, नैतिक और शैक्षणिक संदर्भों में उतने ही प्रासंगिक है जितने महाभारत काल में थे। यह नाटक समकालीन भारतीय समाज की समस्याओं को उजागर करता है और शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक भेदभाव और अवसरों की असमानता जैसे मुद्दों को गहराई से छूता है। शंकर शेष है का यह नाटक समकालीन समाज, परिवार और राष्ट्र की समसामयिक समस्याओ का यथार्थ वर्णन करता है। यह नाटक द्रोणाचार्य की कथा को आधुनिक संदर्भो में प्रस्तुत करता है। नाटक इस बात पर ध्यान आकर्षित करता है कि, आज भी शिक्षा व्यवस्था में जाति, वर्ग और आर्थिक असमानता के आधार पर भेदभाव किया जाता है। इस तरह से नाटक की प्रासंगिकता निम्नलिखित रुप से अभिव्यक्त होती है।

1.जातिवाद और सामाजिक भेदभाव- भारतीय समाज में आदमी को जाति के कारण ही प्रतिष्ठा मिली हुई है अर्थात आदमी की पहचान जाति के आधार पर होती है । इस नाटक में एकलव्य एक वनवासी है जो पिछड़ी जनजातियों का प्रतिनिधि है। उसके पास प्रतिभा है परंतु द्रोणाचार्य का प्रिय शिष्य होने का सौभाग्य उसे नहीं मिलता। बल्कि द्रोणाचार्य ने राजकुमार के बेटे अर्जुन को अपना प्रिय शिष्य बनाया है। भले ही उसके पास प्रतिभा की कमी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि, द्रोणाचार्य जातिवादी और सामाजिक भेदभाव की परंपरा का पालन करते हुए दिखाई देते है। आज भी समाज में शिक्षा और अवसरों को लेकर जाति और वर्ग भेद की समस्याएं देखने को मिलती है। किसी प्रतिष्ठित जाति को कई अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं और किसी पिछड़ी जाति के संघर्ष, त्याग को भी नकारा जाता है। यह नाटक जातिवाद और सामाजिक भेदभाव के आधार पर किए जा रहे पक्षपाती, निर्णय की पोल खोल करता है। द्रोणाचार्य और अर्जुन के जैसी शिष्य परंपरा का कई वर्षो से गुणगान किया जाता रहा है। परंतु अर्जुन धनुर्विद्या में श्रेष्ठ नहीं थे । महान धनुर्धर सिद्ध करने के लिए एकलव्य को इसका श्रेय मिलना चाहिए था परंतु इस व्यवस्था ने उसके साथ भेदभाव किया है। गुरु आज्ञा के बाद शिष्यों के समर्पण की परंपरा एकलव्य ने निभाई है। परंतु इसकी आड़ में द्रोणाचार्य जैसे गुरुओं ने समाज के होनहार युवकों का

भविष्य उध्वस्त किया गया हैं। जिस एकलव्य को द्रोणाचार्य जैसे गुरु ने जाति व्यवस्था के डर से शिक्षा देने में असमर्थता व्यक्त की है। धनुर्विद्या के संदर्भ में द्रोणाचार्य कहते हैं कि, ''ठीक ही किया था शास्त्रों के अनुसार मेरी विद्या केवल ब्राह्मणों और क्षेत्रियों के लिए है।1 '' एकलव्य ने जो धनुर्विद्या में सफलता प्राप्त की है, उस आधार पर अर्जुन महान धनुर्धर नहीं ठहरता।बल्कि जाति व्यवस्था के लिए के आंखों की किरकिरी बन जाता है। साथ ही आगे चलकर एकलव्य की जाती क्षत्रियों के लिए चुनौती न बन जाए, द्रोणाचार्य के वर्चस्व को चुनौती दी गई है जिससे उनकी भावनाएं आहत होती है । द्रोणाचार्य अपने ही समाज का वर्चस्व बनाए रखना चाहते हैं। जिस कारण निम्न जाति की प्रगति से उच्च वर्गों के लोगों की भावनाएँ आहत होती हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भी द्रोणाचार्य जैसे गुरुओं ने स्थाई पैर जमा लिए है। उनके पास योग्यता न होकर भी केवल जाति की प्रतिष्ठा के कारण पदों पर बैठे हुए हैं ।

2. **गुरु शिष्य संबंध की पुनः परिभाषा**- गुरु और शिष्य का संबंध भारतीय संस्कृति में एक अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण संबंध माना जाता है। यह केवल ज्ञान देने और प्राप्त करने का संबंध नहीं होता बल्कि यह एक आध्यात्मिक नैतिक और जीवन उपयोगी मार्गदर्शन का संबंध होता है। एकलव्य ने द्रोणाचार्य को आदर्श मानकर उनकी मूर्ति के सामने अभ्यास किया जो शिष्य की गुरु भक्ति का अद्भुत उदाहरण है । वर्तमान युग में इस प्रकार की जरूरत महसूस हो रही है कि,गुरु और शिष्य का नाता किस प्रकार का होना चाहिए। इस नाटक में द्रोणाचार्य ने पक्षपाती पूर्ण व्यवहार किया है। राजकुमार के लिए एकलव्य की प्रतिभा का बलिदान देना यह द्रोणाचार्य के द्वारा किया गया सरासर गलत है। यह सवाल हमेशा उठता है कि, क्या एक गुरु का आचरण निष्पक्ष और नैतिक नहीं होना चाहिए ? अगर गुरू अपने आचरण से किसी स्वार्थवश दबाव में निर्णय करते हैं तो समाज में गुरुओं की निष्पक्ष और नैतिक मूल्यों के वाहक रूप में पहचान थी। वह पहचान मिटने में देर नहीं लगेगी। अर्जुन स्वयं स्वीकार करते ही की, एकलव्य पर गुरुदेव ने अन्याय किया है तब अर्जुन द्रोणाचार्य को समझाते हुए कहते हैं कि, जाकर अपने शिष्य का सम्मान कीजिए। परंतु द्रोणाचार्य अहंकार में इतने डूब जाते हैं कि, उन्हें सच और झूठ का फर्क महसूस नहीं होता। गुरु और शिष्य का रिश्ता भूलने में देर नहीं लगती । द्रोणाचार्य कहते हैं कि , '' चुप रहो मुझे अपना वचन पूरा करने दो, अपने राजकीय कर्तव्य का पालन करने दो ''।2 इस नाटक में अरविंद कॉलेज के प्रोफेसर गुरु है और उनके छात्र शिष्यों के बीच के संबंधों को केंद्र में रखा गया है यह परंपरागत गुरु शिष्य संबंध की आदर्श छवि को चुनौती देता है और समाज में शिक्षा की सच्चाई को उजागर करता है। नाटक का द्रोणाचार्य कोई पौराणिक (गुरु) नहीं है बल्कि एक आधुनिक शिक्षा है जो शिक्षा व्यवस्था की सच्चाई से सच्चाइयों से जूझ रहा है। गुरु आदर्शवादी है लेकिन समाज और व्यवस्था की विडंबनाओ से टूटने लगता है साथ ही छात्रों से अपेक्षा करता है और ईमानदारी मेहनत और नैतिक रास्ते पर चलने की कोशिश करता है । परंतु जब उसके प्रिय छात्र भ्रष्टाचार का रास्ता चुनते हैं तो वह खुद को असफल मानता है । छात्र प्रतिभाशाली होते हैं परंतु समाज की व्यवहारिकता और सफलता की स्पर्धा से आदर्श के साथ समझौता करते हैं । परीक्षा में नकल करने के कारण उन्हें पकड़ा जाता है और तब आज का शिक्षक भी अपने आदर्शों के साथ समझौता करने के लिए फंस जाता है। नाटक यह दर्शाता है कि, आज के समय में गुरु के आदर्श और शिष्य की वास्तविकता आपस में टकरा रही है । सम्मान तो किया जाता है परंतु उनके बताए मार्ग पर चलने के विरोधी होते हैं। आज का शिक्षक अपने आदर्शों के साथ अकेला ही संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है जो सिखाया गया है, वह उसे व्यर्थ लगता है।

3. **न्याय और अन्य का द्वंद**- द्रोणाचार्य गुरु की भूमिका में है। शिष्य को गुरु का मार्गदर्शन मिलता है जिसके कारण शिष्य के भविष्य का निर्माण होता है। परंतु द्रोणाचार्य जानबूझकर एकलव्य से अंगूठा दीक्षा के रूप में मांगते हैं गुरु का दायित्व है कि, हमेशा न्याय के पक्ष में खड़े रहे पर स्वयं गुरु ही शिष्यों पर अन्याय करें तो अपेक्षा किससे करें? समाज में न्याय मिलना असंभव हो जाएगा साथ ही न्याय के प्रश्न जटिल बनते रहेंगे । गुरु की पहचान ज्ञान से होती है । ज्ञान के आधार पर ही उनका सम्मान होना चाहिए । शिक्षा व्यवस्था में ऐसे गुरु बन बैठे हैं जो स्वयं को ज्ञानी मानते हैं परंतु स्वार्थपूर्ति का वे मौका नहीं छोड़ते। वे शिक्षा को लूटपाट करने का माध्यम बनाते हैं, समाज में जाति व्यवस्था का समर्थन करते हैं । भेदभाव करते हैं ऐसी व्यवस्था के कारण समाज और देश का भविष्य उध्वस्त हो रहा है। द्रोणाचार्य ने एकलव्य से जो दीक्षा मांगी उससे एकलव्य का भविष्य अपाहिज बना दिया है। इस व्यवस्था ने गरीब, दिन - दलितों का हमेशा शोषण किया है। शोषण के मार्ग भिन्न-भिन्न रहे हैं। बदली सिर्फ व्यवस्था है। परंतु व्यवस्था में वही चेहरे है जो अपने स्वार्थी महत्वाकांक्षा के लिए हत्या करने में भी हिचकिचाते नहीं है। जैसे ,प्रस्तुत नाटक में स्वयं द्रोणाचार्य कहते हैं कि, "धर्म की व्यवस्था के लिए जानते नहीं शुद्रों और वनवासियों को धनुर्विद्या की शिक्षा नहीं दी जा सकती।"3 न्याय पक्ष के समर्थन में गुरुओं ने हमेशा डटे रहना चाहिए परंतु वे स्वंय ही अन्याय की परंपरा को निभाते हैं । आज समस्त नेताओं के लड़के विदेश में पढ़ाई कर रहे है । यहां की शिक्षा व्यवस्था नेताओं के हाथों की कठपुतली बन गई है। साथ ही द्रोणाचार्य जैसे गुरू अपनी जाति और धर्म को ही श्रेष्ठ मान रहे है। जिसका कारण विमलेंदु जैसे अन्याय के खिलाफ लड़ने वाले शिक्षकों की हत्या की जा रही है। दीन- दलित

पिछड़ों की प्रतिभा को दबाया जाता है। आज की शिक्षा व्यवस्था पर विशिष्ट जाति का वर्चस्व है।वर्तमान युग में आर्थिक संसाधनों का समान रूप से बटवारा न होने से अमीर और गरीब दो वर्गों में संघर्ष उत्पन्न हो रहे हैं। महंगाई की मार ने आम आदमी की कमर तोड़ दी है। साथ ही बच्चों की पढ़ाई ,घर और परिवार की जिम्मेदारियां आदमी को भ्रष्ट व्यवस्था के साथ हाथ मिलाने के लिए विवश करती है। जैसे नाटक के अरविंद स्वयं कहते हैं कि, "काटू नहीं तो और क्या करूं? तुम लोगों की मेहरबानी से प्रिंसिपल जो हो गया हूं ।"4 नौकरी में तरक्की ,प्रमोशन पाना है तो घर के सभी सदस्यों को भी परेशानियां उठानी पड़ती है साथ ही शिक्षा संस्थानों में संस्था का प्रशासकीय मंडल ईमानदार लोगों को काम करने नहीं देता। अध्यापक और प्रिंसिपल कठपुतली की तरह काम करते हैं। शिक्षालय ज्ञान लेने के केंद्र होते हैं परंतु यहां पर भी शिक्षालयों में प्रेसिडेंट के लड़कों द्वारा गुंडागर्दी और आवारापन किया जाता है। प्रेसिडेंट और संस्था के पदाधिकारी के साथ ही परिवार कॉलेज या स्कूल को अपनी निजी संपत्ति मानते हैं। साथ ही अध्यापकों के साथ, छात्रों के साथ मनचाहा जैसा बर्ताव करते हैं। जैसे इस नाटक में प्रेसिडेंट का लड़का कॉलेज की लड़की पर अत्याचार करता है। तब लड़की अपने अत्याचार की शिकायत प्रिंसिपल से करती है ।प्रिंसिपल भी पद के मोह से लाचार है। उस लड़की को न्याय नहीं दे पाता ।शिक्षा की व्यवस्था प्रेसिडेंट के बेटे के साथ खड़ी रहती हैं। उस लड़की को न्याय नहीं मिलता। यह व्यवस्था प्रेसिडेंट के बच्चे के साथ जितने ताकत के साथ खड़ी रहती है उतनी एक लड़की की इज्जत लूटने पर उसका साथ नहीं देती। प्रेसिडेंट को अपने भविष्य की चिंता सताती है । साथ ही प्रेसिडेंट बेटे राजकुमार के कुकर्म से परिचित रहते फिर भी उसे बचाने की कोशिश करते है। ऐसे कितने छात्रों का भविष्य इस व्यवस्था ने उध्वस्त कर दिया है। जिस अनुराधा पर प्रेसिडेंट का लड़का बलात्कार करता है। अनुराधा न्याय की प्रतीक्षा में है। अरविंद जैसे अध्यापक अनुराधा का साथ तो देते हैं परंतु परिस्थितियों से विवश होकर प्रेसिडेंट का पक्ष लेना पड़ता है जिससे आज के शिक्षा व्यवस्था का सच अभिव्यक्त होता है।

4. **प्रतिभा का सम्मान बनाम राजनीतिक स्वार्थ-** एक और द्रोणाचार्य इस नाटक में अर्जुन राजपुत्र है। राजकुमार के पास सभी संसाधन है जिसके दम पर वे अपनी प्रतिभा को बना सकते है। परंतु एकलव्य पिछड़ी जाति के होने के कारण द्रोणाचार्य उदार भाव नहीं दिखाते । द्रोणाचार्य भी सामाजिक व्यवस्था का ध्यान रखते अपने ही जाति को महत्व देते हैं । राजनीति इतनी निम्न स्तर तक पहुंची है कि, एकलव्य जैसे प्रतिभा का ध्यान नहीं रखती बल्कि उनकी प्रतिभा का बलिदान देकर उनके नाम से सहानुभूति जताई जाती है।पिछड़ी जाति की प्रतिभा को तभी सामने लाया जाता है जिससे उनका राजनीति में लाभ उठा जा सके। जैसे, इस नाटक में चंदू विरोधी गुटका छात्र है उसके पिता भी प्रेसिडेंट साहब के विरोध में राजनीति में खड़े रहते हैं। प्रेसिडेंट प्रिंसिपल के माध्यम से चंदू की नकल पकडते हैं और यूनिवर्सिटी जान बूझकर भेजते हैं ताकि चंदू के पिता की इमेज खराब हो जाए जैसे प्रेसिडेंट साहब कहते हैं कि, '' जरा सोचिए तो इस घटना से मेरी पब्लिक इमेज को कितना धक्का पहुंचेगा, चुनाव का टिकट हाथ से जाता रहेगा ''।5 अर्थात आज राजनीति में जाती ही प्रमुख आधार बनी है। जिसके परिणाम जाति व्यवस्था को मजबूती प्रदान करने में प्रोत्साहन मिलता रहा है। हजारों वर्षों की परंपरा में संसाधनों पर विशिष्ट जातियों का प्रभुत्व रहा है जिस कारण विशिष्ट जातियों को सुरक्षा और मान सम्मान मिलता रहा है। साथ ही उनमें सामाजिक, आर्थिक और मानसिक विकास हुआ है। जिस कारण सधन वर्ग की प्रगति में उसकी प्रगति में बाधा नहीं पहुंची। परंतु व्यवस्था में पिछड़ी जन जातियों को सम्मान नहीं मिला । साथ ही संसाधन के अभाव से लगातार उपेक्षा का शिकार होते रहे हैं। साथ ही जिस प्रतिभा का विकास हुआ उनकी प्रतिभा को द्रोणाचार्य जैसे गुरुओं ने दीक्षा के नाम से समाप्त कर दिया है । एकलव्य की प्रतिभा का बलिदान यह सोच समझकर ही लिया जाता है कि, दूसरी जातियों में प्रतिभा उत्पन्न न हो। इस व्यवस्था ने सत्ता के मोहरे आज तक ऐसे ही दुर्बलों को बनाया हैं। आज के समय में भी योग्य लोगों को पीछे धकेला जाता है ताकि कुछ चयनित लोगों को बढ़ावा मिल सके। जितने भी शिक्षालय है वे सभी सेवा के केंद्र ना होकर आज व्यापार के जैसा मुनाफा कमाने का माध्यम बन गए है । शिक्षा से जुड़ी प्रत्येक व्यक्ति उसकी बात मानने के लिए विवश है। क्योंकि उसी पर घर गृहस्थी चलती है।

5. **आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भेदभाव-** नाटक में यह अभिव्यक्त हुआ है कि, आज भी गरीब और पिछड़े वर्ग के छात्र शिक्षा से वंचित रह जाते हैं आज वर्तमान युग में निजी स्कूल, कोचिंग संस्थान और प्रतियोगी परीक्षाएं यह सब कहीं ना कहीं पैसे और पहुंच पर आधारित होते जा रहे हैं। इस नाटक का द्रोणाचार्य बिल्कुल वैसा ही है। जैसा की महाभारत कालीन द्रोणाचार्य ने पिछड़ी जाति के एकलव्य को पढ़ाने के लिए असमर्थता व्यक्त की थी। आज पैसों के अभाव में कोई भी अध्यापक छात्रों को पढ़ाने के लिए तैयार नहीं है क्योंकि एकलव्य गरीब था और निम्न जाति का भी था। साथ ही प्रतिभाशाली छात्रों को शिक्षा न मिलने से पिछड़ेपन का शिकार बन जाते हैं। वंचित जाति के लोग शिक्षा से बहिष्कृत भी किए जाते रहे है।जिस प्रकार विमलेंदू की प्रेसिडेंट के गुंडो ने बीच रास्ते पर हत्या की है, उसी का डर दिखाकर अरविंद पर भी दबाव बनाया जाता है । साथ ही उसे डराया और धमकाया भी जाता है तो दूसरी और पदोन्नति

का लालच भी दिखाया जाता है । अर्थात शिक्षा में द्रोणाचार्य की स्तुति होती थी आगे परंतु आगे चलकर अरविंद जैसे प्रोफेसरों अपने तत्वों के साथ समझौता किया। अपना ईमान गिरवी रखा। द्रोणाचार्य ने भी दीक्षा के नाम पर एक ईमानदार और सच्चे शिष्य के ज्ञान की कुर्बानी मांगी थी । आज द्रोणाचार्य जैसे सभी क्षेत्रों में गुरूओं की संख्या बढ़ गई है। जिसके कारण आज द्रोणाचार्य से भी आगे गुरुओं ने अपनी पहचान को मिटाने के जैसा कार्य कर रहे हैं। आज शिक्षा की आड में बदले की राजनीति भी की जा रही है। आर्थिक अभाव होने पर भी गुरु समझौता नहीं करते थे परंतु आज का गुरू धन का लालची, पद का मोह और सम्मान की अपेक्षा कर रहा है। हमारी व्यवस्था में समाज तो साथ नहीं देता परंतु परिवार भी साथ नहीं देते है। अनुराधा पर अत्याचार होता है तब पुलिस थाने में शिकायत दी जाती है। परंतु प्रेसिडेंट के दबाव और गुंडो के भय से अनुराधा के माता-पिता शिकायत वापस लेते हैं। इस कारण अरविंद अकेलेपन से त्रस्त हो जाते है। ऐसी कानून की दुर्व्यवहार और व्यवस्था की कमियों के कारण अपराधी बच निकलते हैं । जिस कारण अपराधियों को ना कोई कानून या पुलिस का भय होता है साथ ही अनुराधा जैसी लड़कियां बदनामी के डर से बोल भी नहीं पाती। चंदू भी अत्याचार के खिलाफ लड़ते हुए मारा जाता है। अरविंद जैसे अध्यापक भी परिस्थितियों, व्यवस्था के सामने विवश होकर अपने में अनुकूल बदलाव करते रहे हैं। चंदू ने शिक्षा की अव्यवस्था तथा गुंडो के खिलाफ आवाज उठाई थी परंतु राजकुमार और उसके गुंडे हत्या करते हैं और कालांतर में अरविंद का प्रेसिडेंट प्रमोशन करते हैं । जिस कारण अनुराधा और उसके माता-पिता का भी इस व्यवस्था से विश्वास उठ जाता है। परंतु अरविंद जैसे अध्यापक ईमानदारी से काम करना चाहते हैं। अन्याय के खिलाफ लड़ने की कोशिश करते हैं तब अरविंद जैसे प्रामाणिक शिक्षकों के विरुद्ध प्रेसिडेंट गबन के आरोप लगाकर धमकाते हैं। इसलिए प्रेसिडेंट की भ्रष्टाचारी व्यवस्था के आगे अरविंद को भी झुकना पड़ता है । अरविंद जैसे शिक्षकों को मोहरा बनाने वाली शिक्षा व्यवस्था का सच नाटक में उजागर हुआ है । शिक्षण संस्थानों के सेवा भाव से ही हजारों की संख्या में छात्रों का भविष्य निर्माण हुआ परंतु यह भी सच है कि, आज शिक्षण संस्था, व्यापार का केंद्र बन गई है। जहां शिक्षण संस्था शिक्षकों को खरीदती है साथ ही उनका आर्थिक शोषण भी करती है। जहां शिक्षा संस्थानों के प्रेसिडेंट और अन्य पदाधिकारी लाखों चंदा वसूल करते हैं। कर्मचारी के चयन में लाखों पैसे लेकर नियुक्तियां देते हैं। जैसे, " उस कमीन आदमी ने दुकानों की तरह बीस शिक्षण संस्थाएं खोल रखी है । साथ ही लेनदेन का व्यापार होता है। शिक्षण संस्थानों के लाखों रुपए ग्रांट का उपयोग,यह शिक्षाशास्त्री अपने लेनदेन के व्यवसाय में करते हैं ।"6 आज का द्रोणाचार्य तमाम यह घटनाएं देखता है फिर भी चिंतित नहीं होता। साथ ही वह भी किसी न किसी रूप में व्यवस्था का भागीदार बन जाता है। आज का द्रोणाचार्य सुविधाभोगी है जिस कारण इस व्यवस्था का शिकार बन गया है। द्रोणाचार्य कहते हैं कि, "उस दिन तुमने मुझे भड़काया। उस दिन तुमने मुझे राजकीय अन्न की दासता में धकेला। अपने लिए वस्त्र, राजकीय सम्मान । उस दिन तुमने क्यों नहीं रोका ।"7 अर्थात आदमी जब दूसरों पर निर्भर हो जाता है ।जैसे कि, दूसरों के टुकड़ों पर जीवनयापन करता है तो उसके विरुद्ध क्रांति करने का अधिकार खो देता है ।आज ऐसे ही द्रोणाचार्य की संख्या बढ़ गई है जो दूसरों के फेकें टुकड़ों पर जिंदगी गुजारते हैं । दूसरों के द्वारा दी गई सुविधाओं का उपभोगी बनकर आरामदायक जीवन जीते हैं । ऐसे द्रोणाचार्य अपने शिष्यों में स्वाभिमान की भावना जागृत नहीं कर पाते। नाटककार ने राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था की आलोचना भी की है। इस नाटक में यह भी दिखाया गया है कि, कैसे राजनीति, जातिवाद और पूंजीवाद शिक्षा को नियंत्रित करते रहे हैं। व्यवस्था में आज रिश्वत जोरों पर है। क्योंकि रिश्वत के बिना कोई भी काम नहीं होता बल्कि हर एक काम के लिया रिश्वत लेना अधिकार जैसी कुप्रवृत्ति बन गई है। जैसे इस नाटक में चंदू प्रेसिडेंट के पक्ष में काम भी करता है। अरविंद को समझाते हुए कहता है कि, " तुम प्रेसिडेंट का साथ दोगे वह भी तुम्हारा साथ देगा अर्थात इस व्यवस्था के साथ चलने से उसे साथ देने से भला हो जाएगा।"8 जो भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाता है उसे चारों ओर से यह व्यवस्था घेर लेती है साथ ही आत्महत्या करने के लिए विवश कर देती है। जैसे इस नाटक में चंदू के सामने ऐसी परिस्थितियाँ बनाई जाती है जिस कारण चंदू स्वयं आत्महत्या कर लेता है परंतु उसकी हत्या के लिए यह व्यवस्था जिम्मेदार है ।

6.आधुनिक एकलव्य का संघर्ष - आज भी लाखों छात्र जो गांव ,झुग्गीयों या पिछड़े क्षेत्रों से आते हैं उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए संघर्ष और त्याग करना पड़ता है। यह नाटक उन छात्रों की आवाज है जो ना तो अर्जुन है और न हीं राजपुत्र । लेकिन फिर भी अपने दम पर आगे बढ़ना चाहते हैं। आज की शिक्षा के क्षेत्र में द्रोणाचार्य जैसे गुरुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। जैसे, उनके संवाद से उनकी मनोवृति प्रदर्शित होती है। जैसे, द्रोणाचार्य कहते हैं की, "एकलव्य का अंगूठा बने रहने का अर्थ समझते हो, धनुर्विद्या पर उसका अधिकार हो जाएगा, धीरे-धीरे उसकी जाति का अधिकार हो जाएगा । शक्तिशाली होने के बाद यह क्षत्रियों से स्पर्धा करेंगे और परिणाम होगा वर्णाश्रम धर्म पर संकट ।"9 इस शिक्षा व्यवस्था ने हमेशा एकलव्य जैसे बच्चों का भविष्य बनने नहीं दिया है। एक महान प्रतिभा को उभरने से पहले ही कुचल दिया है। ऐसी शिक्षा की परंपरा से क्या बदलाव अपेक्षित है? ऐसे अहंकारी गुरु की व्यवस्थाओं ने सामाजिक

समता को कुचल दिया है। इसे सचेत करते हुए नाटककार ने प्राचीन और आज की शिक्षा व्यवस्था की तुलना की है। गुरु और शिष्यों की दुर्दशा पर चिंता भी व्यक्त की है। इस नाटक में प्रमोशन के चक्कर में अरविंद व्यवस्था का शिकार बन जाते है। वर्तमान में कई शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों का आर्थिक शोषण भी होता है। प्रेसिडेंट और अन्य अधिकारीगण मिलकर शिक्षकों के वेतन की लूट करते हैं। किस प्रकार प्रेसिडेंट और प्रिंसिपल की मिलीभगत से कर्मचारियों का, शिक्षकों का आर्थिक शोषण करते है इसका निम्नलिखित उदाहरण है । जैसे '' वे लोग थे तुम्हारे सहयोगी ,जिन्हें तुम प्रेसिडेंट के कहने पर पांच सौ की रसीद लिखकर केवल तीन सौ रूपए वेतन देते थे।"10 यह लूट की परंपरा कई वर्षों से चल रही है । वर्तमान में शिक्षकों ने पैसे न देने पर उनका मानसिक शोषण करना, धमकाना एक आम बात बन गई है जो शिक्षा व्यवस्था की पतनशील प्रवृत्ति को दर्शाती है। साथ ही परीक्षाओं में नकल की प्रवृत्ति बढ़ गई है । नकल न चलने देने पर प्रेसिडेंट के बेटे अध्यापकों को तथा अन्य शिक्षकों को धमकाते भी है । नकल पकड़े जाने पर उनकी रिपोर्ट को व्यवस्थापन दबाता है। जैसे, चंदू ने कहा है कि, "नकल को लेकर प्रेसिडेंट के लड़के ने सबके सामने छुरा रखकर नकल की थी। वह पकड़ा लेकिन उसकी रिपोर्ट दबा दी गई।"11 आज शिक्षा की व्यवस्था बड़े-बड़े व्यक्तियों, राजनेताओं और व्यापारियों के हाथों की कठपुतली बन गई है जिसका उपयोग स्वंय के फायदे के लिए किया जा रहा हैं। शिक्षा संस्थानों की सहायता से नेता सत्ता तक पहुंच गए हैं। उन्होंने शिक्षकों के दम पर ही चुनाव जीते भी है। निर्धन एवं गरीबों का शोषण करते रहे हैं जो इस व्यवस्था का साथ नहीं देते उनको मारा जाता है और हादसा कहकर कुछ दिन के बाद उस पर पर्दा पड़ जाता है । आज की व्यवस्था में द्रोणाचार्य का वह स्थान नहीं रहा जो समाज, परिवार को दिशा देने का काम करता था। आज का द्रोणाचार्य इस सडी व्यवस्था से पीटा जा रहा है ।और आज उसके पास कोई आदर्श शेष नहीं रहा है ।

निष्कर्ष -

एक और द्रोणाचार्य यह नाटक समकालीन समाज एवं परिवार की समस्याओं एवं भ्रष्ट प्रवृत्ति को उजागर करता है ।इस नाटक में एक और पौराणिक प्रसंगों का संदर्भ देकर वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, जातिवादी सोच, संकीर्ण राजनीति, स्त्रियों पर अन्याय- अत्याचार को अभिव्यक्त किया है । साथ ही महंगाई की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, नैतिक मूल्यों का पतन और राजनेताओं का शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिक तथा स्वार्थी मनोवृति का पर्दाफाश किया है। शिक्षण संस्थानों में सेवाभाव को महत्व दिया जाता था परंतु वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था में यह सेवाभाव समाप्त हो चुका है। प्रेसिडेंट के द्वारा शिक्षा की व्यवस्था में कई प्रकार का भ्रष्टाचार होता है साथ ही शिक्षा संस्थानों को दुकानों की तरह चलाकर भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन दिया जाता है । उनके बेटे द्वारा नकल करना और लड़कियों की छेड़खानी करना जैसे अपराधी प्रवृत्तियों के शिक्षा के स्थान केंद्र बन गए है। संक्षेप में देखा जाए तो प्रस्तुत नाटक में शोषण की सभी हदों को पार किया गया है ।अर्थात आज की शिक्षा व्यवस्था तथा पद्धति में व्याप्त समस्याओं तथा भ्रष्टाचार को कई संदर्भ में अभिव्यक्त किया है जो वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की पोल खोलने में सहायता करता है।

संदर्भ सूची –

1. शंकर शेष , एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ- क्र -16
2. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र -20
3. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र- 25
4. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र - 28
5. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र - 30
6. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र - 38
7. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र - 41
8. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र - 50
9. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र - 51
10. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र -55
11. शंकर शेष, एक और द्रोणाचार्य - प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्र - 58